Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

37

व्यावहारिक भाषा विज्ञानक क्षेत्रमे अशोक अविचलक अवदान

डॉ. नरेन्द्रनाथ झा
शोध पर्यवेक्षक स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
पी. जी. सेन्टर , सहरसा
बी. एन. मण्डल विश्वविद्यालय , मधेपुरा

प्रमिला कुमारी
शोधार्थी स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
पी. जी. सेन्टर , सहरसा
बी. एन. मण्डल विश्वविद्यालय , मधेपुरा

भाषाक सम्बन्धमे सिद्धान्त आ व्यवहार दुनु निरंतर विमर्शक विषय बनल रहल अछि। संसारमे हजारो भाषाक अस्तित्व अछि। एहिमे स्वभाविक रुपे अस्तित्वमे आयल भाषा सभ तS अछिये संगहि अनुकरण आ बनाओल भाषा सभ सेहो सम्मिलित अछि I परा आ पस्यन्तिक अंतर्मुखी आवरणसँ बैखरी स्वरूप ग्रहण करैत भाषा सबहक संग-संग भाषाक उत्पति, स्वरुप, उपयोग आदि पर बौद्धिक विमर्श सेहो कमोवेश प्रारम्भ भS गेल।

भारतमें ऋगवेद सन मानवता वादक पृष्ठ 'पोषक श्रृष्टिक सभउपादान अर्थात् मनुक्खक संग-संग सभ जीव जन्तु आ समस्त प्राकृतिक उपादानक समता मुलक चिन्तन जाति, क्षेत्र ,रंग ,धर्म आदिक भेद भावसँ रहित वौद्धिक आ आध्यात्मिक खोराक उपलब्ध करौलक तS कनिये पाछाँ जे -अवेस्ताक प्रणयण भारतक सांस्कृतिक इति वृति बाहर संभव भेल। इ दुनू पोथी भाषा विज्ञान अध्ययनक लेल सर्वाधिक प्राचीन पाथेय उपलब्ध करबैत अछि। ऋगवेद में उल्लेख अछि ' देवी वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपां पशवो वदन्ति "...01
एहि वाक्यमे स्पष्ट कयल गेल अछि ,जे मनुक्खक संग -संग जीव जंतु धरि जाहि भाषाक उपयोग करैत अछि ,ओ देवगण द्वारा प्रदान कयल गेल अछि I एतहिसँ भाषाक देवीय उत्पतिक सिद्धान्त समक्ष अबैत अछि।

भाषाक भाषावैज्ञानिक दृष्टिसँ विमर्श दृष्टिमे यजुर्वेद महत्वपूर्ण भS उठैत अछि। कृष्ण यजुर्वेद मे इन्द्रक उक्ति सलाह दैत अछि जे .....

" लोकक उक्तिकेँ छोट-छोट रुपमे विभक्त कS देल जाय ".

आगाँ वेदक छ: टा अंगमे शिक्षा, निरुक्त, छंद आदिक संग व्याकरणकेँ सेहो महत्व प्रदान कयल गेल अछि। गोपत ब्राह्मणमे धातु, लिंग, वचन उपसर्ग ,प्रत्यय , मात्रावर्ग, अक्षर आदिक विस्तृत विश्लेषण कयल गेल अछि तS मैत्रेयिनी संहिता में छ: टा विभक्तिक संज्ञा उल्लेख कयल गेल अछि I

एतरेय ब्राह्मणमें स्पष्ट उल्लेख अछि " सप्तधा वै वागवदत् " ...02

आगाँ चलि पाणिनी भाषाक स्वरूपकेँ नियम वद्ध करवाक प्रयास करैत व्याकरणक स्चना कयलन I मुदा भाषाक रूप स्थिर राखब दुरूह कार्य होइत अछि ,तेँ पतंजलि जखन पाणिनीक व्याकरण पर भाष्य लिखलनि ,जे पाणिनीक वाद सेहो सहजीकरण आदिक प्रभाव स्वरूप बजबाक स्वरुपमे जाहि प्रकारक परिवर्तन आयल छल , उपलब्ध प्रतीक सभ शब्दक स्वरूप ग्रहण कयने छल। ध्वनिक हर्स्व आ दीर्घ उपयोगक आधार पर जे स्वरूप विकसित भेल छल, क्रियापद आदिक जाहि तरहे स्वभाविक विकास भेल छल तकरा समेटवाक प्रयास कयलनि।

एतहिसँ व्यवहारिक भाषा विज्ञानक जन्म होइत अछि। मैथिलीमे भाषा विज्ञानक प्रारम्भ 1881 ई० में होइत अछि। जखन जार्ज अब्राहम गियर्सन मैथिली ग्रामर लिखलनि।

व्याकरणसँ सम्बन्धितमें कयल कार्य एहि प्रकार अछि -

	पोथी	लेखक	वर्ष
1.	मैथिलीग्रामर	जॉर्ज अब्राहम गियंसन	1881
2.	बाल व्याकरण	गंगापति सिंह	1922
3.	मैथिली भाषा व्याकरण भास्कर	हीरालाल झा	1926
4.	मिथिला भाषा विद्योतन	पण्डित दीनबन्धु झा	1926
5.	लघु विद्योतन	पण्डित गोविन्द झा	1963
6.	मैथिली व्याकरण प्रबोध -	बाबु भोला दास	1966
7.	आधुनिक मैथिली व्याकरण ओ रचना	बाल गोविन्द झा व्यथित	1966
8.	मैथिली व्याकरण प्रवेशिका	प्रो० रमानाथ झा	1967
9.	उच्चतर व्याकरण	पंडित गोविन्द झा	1979

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

10. मैथिली व्याकरण ओ रचना	युगेश्वर झा	1989
11. मैथिली भाषाशास्त्र व्याकरण ओ रचना	धीरेन्द्रनाथ झा	1985
12. मैथिली परिशीलन	पंडित गोविन्द झा	2007
13. मैथिली भाषाः सर्वेक्षण आ विश्लेषण	डॉ० अशोक कुमार झा	2007
14. मैथिली व्याकरण रचना आ प्रकाश	मतिनाथ मिश्र मतंग	2011
15. मैथिली व्याकरण ओ रचना	डॉ० विजेन्द्र झा	2021
16. मैथिली भाषा विज्ञान -	डॉ० विजयेन्द्र झा	2025

एकर अतिरिक्त भाषा वैज्ञानिक दृष्टिमे जार्ज अब्राहम ग्रियर्सनक सर्वे ऑफ मैथिली भारतीय भाषा सर्वेक्षणक क्रम में छल आ डॉ० रामअवतार यादवक ए रिफरेन्स ग्रामर ऑफ मैथिली (1966) आदि केर विशेष भाषा वैज्ञानिक महत्व अछि। स्पष्ट अछि जे भारतीय परम्परामे भाषा विज्ञानक महत्वक इतिहास प्रायः तीन हजार वर्षसँ बेसी अछि।

डॉ० अशोक अविचलक महत्वपूर्ण भाषा वैज्ञानिक कृति अछि,

'मैथिली भाषा: सर्वेक्षण आ विश्लेषण

ई पोथी हिनक मूल नाम अशोक कुमार झा नामसँ छपल अछि। एकर प्रकाशक अछि - मिथिला सांस्कृतिक परिषद् जमशेदपुर, एकर पहिल संस्करण 2007 ई० मे छपल आ एकर दोसर संस्करण 2025 में समक्ष आयल । एहि पोथीक महत्वक सम्बन्धमे डॉ० रमण झा लिखैत छथि

" मैथिली साहित्यक छात्र तS भाषा विज्ञानक डेरे छाँह काटते अछि ,मुदा आइ-काल्हिक प्राध्यापको लोकनि एहिसँ कोसों दूर रहए चाहैत छथि। स्नातकोत्तर तथा अन्य प्रतियोगिता स्तर पर भाषा विज्ञान अनिवार्य रुपसँ पढ़य पड़ैत छैक मुदा विडम्बना अछि जे शिक्षक लोकनि एहिसँ विमुख, विरत बुझाइत छथि जखन कि कोनों भाषाक अध्ययनक हेतु भाषाविज्ञानक ज्ञान राखब अपेक्षित अछि। भाषाविज्ञानक क्षेत्र में, डॉ० सुभद्र झा एवं पं० गोविन्द झाक महत्वपूर्ण मैलिक अवदान अवश्य अछि जे मैथिली साहित्यक गरिमाकेँ बढ़वैत अछि। किन्तु आइयो एहि विषय पर मैथिली पोथीक नितान्त अभाव अछि । हमरा अत्यन्त प्रसन्नता अछि जे डॉ अशोक कुमार झा जे साहित्यिक क्षेत्रमे अशोक अविचल नामे प्रख्यात छथि , मंचस्थ कवि, समीक्षाक वक्ताक रुपमें तड सर्वविदित छथिए, भाषा विज्ञानक क्षेत्रमे सेहो एकटा मीलक पाथर सिद्ध होएताह। कारण स्पष्ट अछि , अविचलजी जाहि रूपे सम्पूर्ण मिथिलांचलक भ्रमण कए आ सभ क्षेत्रक बोलीक नमूना एकत्र कयलनि अछि। ".....04

डा० रमण झा जाहि प्रकारे गाम -गाम घुमि अशोक अविचल द्वारा एकत्रित कयल गेल नमूनाक जिक्र करैत छथि , ओ एहि कारणे महत्वपूर्ण अछि जे ई मैथिलीक व्यवहारिक भाषा विज्ञानक विकासक लेल आधार उपलब्ध करबैत अछि I

सैद्धान्तिक भाषा विज्ञानक आधार ,पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिक सिद्धानक आधार आ संस्कृत ओ हिन्दी भाषा विज्ञानक आधार पर मैथिलीमे भाषा विज्ञानक पोथीक रचना करब I एहि लेल एखन धरि जार्ज आब्राहम ग्रिर्यसन द्वारा प्रस्तुत नमुना अछि ,जे भाषा विज्ञानक कोनो उद्धरणक , मैथिलीक विविध बोलीमे पाठ जेकाँ अछि आ लगभग सौ वर्ष बितलाक वाद वर्तमान स्वरुपक निर्धारण ओहि आधार पर नहि कयल जा सकैत अछि I

अशोक अविचल दैनन्दिन्न जीवन मे उपयोगित वाक्यके प्रश्नावलीक रूप दS मैथिलीक विविध क्षेत्रमे जेना मधुवनी, दरभंगा ,सीतामढ़ी, सुपौल, बेगुसराय, सहरसा, मधेपुरा ,पूर्णिया , भागलपुर, समस्तीपुर, मुज़फ्फरपुर, वैशाली सँS नेपालक तराई क्षेत्र अर्थात नेपालक मैथिली भाषी क्षेत्रक कतेको गामसँ नमूना एकत्रित कयलनि ! ई नमुना सभ मैथिलीक वर्तमान स्वरूपकेँ स्पष्ट करैत अछि , सेहो प्रमाणिकताक संग।

सन्दर्भ :-

1. ऋग्वेद 8 -100 -11 (10 /125)
2. एतरेय ब्राहमण - 1 /7/3
3. मैथिली भाषा: सर्वेक्षण आ विश्लेषण - शुभशंसा